(Language

भी परीक्षण
र्ण भूमिका
जटील शब्दों
से कोई
परीक्षण बन
का जिसके
में लाया जा
के प्रयोग से
जाती है।

level of Items) →

प्रश्नों के कठिनाई
अत्यधिक सरल
वैधता प्रायः
ाई वाले प्रश्नों
वसनीय होता

y of the Test) →

उसकी वैधता
वस्तुनिष्ठ
हैं जबकि
हैं।

परीक्षण वैधता के प्रकार →

आनुभविक वैधता (Empirical Validity) →

जब प्रयोज्यों के परीक्षण व्यवहार तथा निकष व्यवहार के मध्य सम्बंध को ज्ञात करके परीक्षण द्वारा मापी जा रही विशेषता या योग्यता के सम्बंध में प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं, तो इसे आनुभविक वैधता या निकष वैधता कहा जाता है। यदि परीक्षण प्राप्तांकों तथा निकष प्राप्तांकों में घनिष्ठ सम्बंध होता है, तो परीक्षण को वैध स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इस प्रकार की वैधता को प्रायः दो चरों के मध्य सम्बंध के द्वारा व्यक्त किया जाता है, इसलिए आनुभविक वैधता की सर्वोत्तम व सर्वाधिक प्रयोग में आने वाली सांख्यिकी विधि गुणनफल आघूर्ण सहसम्बंध है।

विषयगत वैधता (Content validity) →

जब परीक्षण की वैधता स्थापित करने के लिए परीक्षण परिस्थितियों तथा परीक्षण व्यवहार का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके परीक्षण द्वारा मापी जा रही विशेषता / योग्यता के सम्बंध में प्रमाण एकत्रित किये जाते हैं तो इसे विषयगत वैधता कहते हैं। विषयगत वैधता को सुनिश्चित करने के लिए कई भिन्न-2 प्रकार के प्रमाण एकत्रित किये जा सकते हैं तथा विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-2 प्रमाण अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इसलिए विषयगत वैधता कई प्रकार की हो सकती है।

Scanned with CamScanner

अन्वय वैधता (Construct validity) →

जब मानसिक शीलगुणों (Mental Traits) की उपस्थिति के आधार पर परीक्षण की वैधता ज्ञात की जाती है तब इसे अन्वय वैधता कहते हैं। पाँच दशकों के व्यतीत हो जाने के बावजूद भी अन्वय वैधता को वैधता का सबसे नया प्रत्यय माना जाता है। यह विचार सन् 1952 व 1954 में अमेरिकन मनोविज्ञान संघ के द्वारा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के लिए गठित दो समिति के प्रतिवेदनों में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया था। वास्तव में विभिन्न मानवीय अन्वय है। इसमें से प्रत्येक के अनेक अर्थ है तथा इन गुणों को रखने वाला व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा, इस पर विभिन्न विद्वान भिन्न-2 विचार रखते हैं।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन के पक्ष (Aspects of Evaluation) → शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना होता है। व्यवहार और व्यक्तित्व का घनिष्ठ रूप से सम्बंध है। अन्य शब्दों में बालक के व्यवहार उसके व्यक्तित्व में अनेक पक्षों से सम्बंधित होते हैं। बालक द्वारा जो व्यवहार किये जाते हैं, उसके दो रूप होते है। बाह्य तथा आन्तरिक। एक छात्र को जब हम भाषा की शिक्षा प्रदान करते हैं तो वह अपना बाह्य व्यवहार बोलने, पढ़ने तथा लिखने के माध्यम से व्यक्त करता है, परन्तु आन्तरिक व्यवहार उसके समझने, सोचने तथा भावों आदि में निहित होते हैं। इन दोनों ही व्यवहारों के मुख्य रूप से तीन अंग होते हैं। ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक होते हैं। इसके निम्न पक्ष हैं -

(क) संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Aspects)
(ख) संवेदनात्मक पक्ष (Affective Aspects)
(ग) शारीरिक कौशल (Psychomator Aspects)

(क) मूल्यांकन का संज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Aspects of Evaluation) →

इसके निम्न पक्ष हैं -

① ज्ञान (Knowledge)
② बोध (Understanding)
③ अनुप्रयोग (Application)
④ विश्लेषण (Analysis)
⑤ संश्लेषण (Synthesis)

① ज्ञान (Knowledge) → किसी भी वस्तु को आरम्भ करने से पूर्व हमें उसका ज्ञान होना चाहिए। उसके बाद उसकी जानकारी होती है। ज्ञान से हमें किसी वस्तु का आभास होता है। किसी वस्तु की पहचान कर लेने पर हमें सही वस्तु का ज्ञान हो जाता है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान या जानकारी का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है+

(i) शब्दावली की जानकारी (Knowledge of Terms)
(ii) विशिष्ट तथ्यों की जानकारी (Knowledge of specific facts)
(iii) विशिष्ट वस्तुओं की जानकारी (Knowledge of specific Items)
(iv) रीति-रिवाजों की जानकारी (Knowledge of customs)
(v) नियम तथा सिद्धान्तों का ज्ञान (Knowledge of laws and Principles)
(vi) कसौटी की जानकारी (Knowledge of criteria)
(vii) विधियों की जानकारी (Knowledge of Methodology)

(i) शब्दावली की जानकारी (Knowledge of Terms) → प्रत्येक ज्ञान में कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये शब्द (Terms) एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

(ii) विशिष्ट तथ्यों की जानकारी (Knowledge of specific facts) → प्रत्येक देश के कुछ विशिष्ट व्यक्ति, दिनांक तथा घटनाएँ होती हैं। जैसे - महात्मा गाँधी, 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि।

(iii) विशिष्ट वस्तुओं की जानकारी (Knowledge of specific items) → जैसे - जोड़, घटाना, गुणा, भाग आदि।

(iv) रीति रिवाजों की जानकारी (Knowledge of customs) → प्रत्येक समाज के कुछ रीति रिवाज होते हैं। इस श्रेणी में इसी का ज्ञान सम्मिलित किया जाता है।

(v) नियम या सिद्धान्त (Knowledge of laws and Principles) → प्रत्येक विज्ञानों में कुछ नियम या सिद्धान्त होते हैं। जैसे- अर्थशास्त्र में बचत का नियम, भौतिकी में आकर्षण शक्ति का नियम आदि।

Scanned with CamScanner